

# International Multidisciplinary Research Journal

## *Golden Research Thoughts*

Chief Editor  
Dr.Tukaram Narayan Shinde

---

Publisher  
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor  
Dr.Rajani Dalvi

Honorary  
Mr.Ashok Yakkaldevi

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

**Regional Editor**

Manichander Thammishetty

Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

**International Advisory Board**

Kamani Perera  
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Mohammad Hailat  
Dept. of Mathematical Sciences,  
University of South Carolina Aiken

Hasan Baktir  
English Language and Literature  
Department, Kayseri

Janaki Sinnasamy  
Librarian, University of Malaya

Abdullah Sabbagh  
Engineering Studies, Sydney

Ghayoor Abbas Chotana  
Dept of Chemistry, Lahore University of  
Management Sciences[PK]

Romona Mihaila  
Spiru Haret University, Romania

Ecaterina Patrascu  
Spiru Haret University, Bucharest

Anna Maria Constantinovici  
AL. I. Cuza University, Romania

Delia Serbescu  
Spiru Haret University, Bucharest,  
Romania

Loredana Bosca  
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea,  
Spiru Haret University, Romania

Anurag Misra  
DBS College, Kanpur

Fabricio Moraes de Almeida  
Federal University of Rondonia, Brazil

Xiaohua Yang  
PhD, USA

Titus PopPhD, Partium Christian  
University, Oradea, Romania

George - Calin SERITAN  
Faculty of Philosophy and Socio-Political  
Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

.....More

**Editorial Board**

Pratap Vyamktrao Naikwade  
ASP College Devrukh, Ratnagiri, MS India Ex - VC. Solapur University, Solapur

Iresh Swami

Rajendra Shendge  
Director, B.C.U.D. Solapur University,  
Solapur

R. R. Patil  
Head Geology Department Solapur  
University, Solapur

N.S. Dhaygude  
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

R. R. Yaliker  
Director Managment Institute, Solapur

Rama Bhosale  
Prin. and Jt. Director Higher Education,  
Panvel

Narendra Kadu  
Jt. Director Higher Education, Pune

Umesh Rajderkar  
Head Humanities & Social Science  
YCMOU, Nashik

Salve R. N.  
Department of Sociology, Shivaji  
University, Kolhapur

K. M. Bhandarkar  
Praful Patel College of Education, Gondia

S. R. Pandya  
Head Education Dept. Mumbai University,  
Mumbai

Govind P. Shinde  
Bharati Vidyapeeth School of Distance  
Education Center, Navi Mumbai

G. P. Patankar  
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Alka Darshan Shrivastava  
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Chakane Sanjay Dnyaneshwar  
Arts, Science & Commerce College,  
Indapur, Pune

Maj. S. Bakhtiar Choudhary  
Director, Hyderabad AP India.

Rahul Shriram Sudke  
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

Awadhesh Kumar Shirotriya  
Secretary, Play India Play, Meerut (U.P.)

S. Parvathi Devi  
Ph.D.-University of Allahabad

S. KANNAN  
Annamalai University, TN

Sonal Singh,  
Vikram University, Ujjain

Satish Kumar Kalhotra  
Maulana Azad National Urdu University



# Golden Research Thoughts

**GRT**

“बंबईया हिंदी: स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों के संदर्भ में...”



प्रा. पोपट यशवंत जाधव

हिंदी विभाग ,मु.सा. काकडे महाविद्यालय, सोमेश्वरनगर,

ता. बारामती, जि. पुणे।

## प्रास्ताविक

मुंबई के बहुभाषी, बहुधर्मी और बहुवर्गी समाज में परस्पर संपर्क और संप्रेषण की भाषा बोलचाल की ‘बंबईया हिंदी’ है। यह विशेषतः मुंबई और मुंबई के पास पड़ोस के उपनगरों में ही बोली जाती है। इसलिए यह एक क्षेत्र विशेष की भाषा है। मराठी भाषी व्यक्ति को गुजराती या अन्य भारतीय भाषाएँ नहीं आती और गुजराती तथा उनके समान अन्य भारतीय भाषियों को मराठी। लेकिन सभी भारतीयों को कम अधिक मात्रा में हिंदी की समझ होती ही है। अतः मुंबई के अलग अलग भाषी लोग अपनी निज भाषा की शैली में टूटी-फूटी हिंदी का प्रयोग आपसी विचार-विमर्श के लिए करने लगे।

‘बंबईया हिंदी’, ‘मुंबईया हिंदी’ अथवा ‘बाँबे हिंदी’ में विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ साथ कुछ अंग्रेजी के शब्द भी घुलमिल गए और इस प्रकार अनेक भाषाओं के सहयोग से मुंबई में जिस लोक भाषा का प्रचलन हुआ वह ‘बंबईयाँ हिंदी’ के नाम से विकसित हुई। डॉ. पांडुरंग पाटील कहते हैं, “बंबई में विभिन्न प्रांतों से भिन्न भाषा-भाषी लोग आते हैं। अतः यहाँ भाषा वैविध्य पाया जाता है। बंबई में भाषा की विविधता के कारण एक मिश्रित भाषा बन गई, जिसे ‘बंबईयाँ हिंदी’ कहते हैं।”

‘बंबईया हिंदी’ की अपनी अलग पहचान है। महिपसिंह लिखते हैं, “गुजरात, मराठी या दक्षिण भारत के लोगों के मुँह से जब मैं हिंदी सुनता हूँ तो मुझे वह बहुत अच्छी लगती है। स्थानीय रंगों में रंगी हुई हिंदी मुझे उत्तरवालों की उस हिंदी से कहीं प्यारी लगती है, जिसे लोग

बड़े बनावटी ढंग से गढ़-गढ़कर सजाने सवारने में लगे हुए हैं।”

बंबईया हिंदी मुंबई महानगर की बोलचाल की भाषा है। कुछ विचारवंत इसे ‘टपोरी हिंदी’ भी कहते हैं। अतः इस भाषा का और सामाजिक, साहित्यिक, मनोरंजनात्मक क्षेत्रों का परस्पर संबंध क्या है, इस पर विचार करना जरूरी है।

## बंबईया हिंदी और सिनेमा:

बंबईया हिंदी का विकास सबसे अधिक हिंदी सिनेमा के कारण हुआ। सिनेमाओं को देखकर ही बहुत कुछ लोगों ने बंबईया हिंदी सीखी है। ‘मुन्नाभाई एम.बी.बी.एस.’, ‘लगे रहो मुन्नाभाई’, ‘फिर हेरा फेरी’, ‘जोश’ जैसी फिल्में इस भाषा के कारण हिट (लोकप्रिय) हुई। इसमें गीतात्मता की



विशेषताएँ भी पाई जाती हैं। हिंदी सिनेमा में गीतों के लिए इतनी सरल और संप्रेषणीय भाषा का प्रयोग पहली बार हुआ है—

“अपुन बोला तु मेरी लैला,  
वो बोली फेकताय साला...”  
“ये! क्या बोलती तु...?”  
ये! क्या मैं बोलू...?  
आती क्या खंडाला...”

जैसे गीतों में बंबईया हिंदी के कारण जान आ गई है और वे शिक्षित, अनपढ़ लोगों की जुबान पर स्वाभाविक रूप से चढ़ गए हैं। बंबईया हिंदी और हिंदी उपन्यास:

सिनेमा के समान हिंदी साहित्य में भी बंबईया हिंदी का प्रयोग साहित्यिक हिंदी के साथ साथ चलता है। देवेश ठाकुर, जगदंबाप्रसाद दीक्षित, सुरेंद्र वर्मा, महिप सिंह, राही मासुम रजा, शैलेश मटियानी, ममता कालिया, मनोहरश्याम जोशी आदि उपन्यासकारों ने अपनी औपन्यासिक कृतियों में ‘बंबईया हिंदी’ भाषा का प्रयोग किया है। इसमें भाव संप्रेषण की क्षमता अधिक है, “सीधा दायों बाजू जाने का... आरे मिल्क का बूथ, पीछू सामंतवाडी...” प्रस्तुत वाक्यांश की बंबईया हिंदी से केवल एक दूसरे के भाव समझ में आते हैं। व्याकरणिक दृष्टि से यह भाषा सही नहीं उसमें केवल भाव संप्रेषण के चिह्न हैं। “आक्खा जिंदगी सेठ लोक का झूठा-भांडी घसने में कोबडी का अंडा सरीखा फूट गयेला।” इसमें मराठी शब्दों का हिंदीकरण किया हुआ लगता है। अतः दूसरी बात यह भी स्पष्ट होती है कि मराठी के प्रभाव से हिंदी साहित्यकार भी नहीं बच पाए हैं।

### संप्रेषणीयता:

इसमें विचार संप्रेषण की क्षमता अधिक है क्योंकि मुंबई में ‘मिक्सींग लिग्वल कल्चर’ है। बहुप्रांती, बहुधर्मी लोगों की विविध संस्कृतियों को अभिव्यक्त करने की सरलता बंबईया हिंदी निभा रही है। ‘लगे रहो मुन्नाभाई, मुन्नाभाई एम.बी.बी.एस.’ में संजय दत्त ने ‘गांधीगिरी’ और ‘गांधी-दर्शन’ जैसे गंभीर विषय को बंबईया हिंदी के माध्यम से लोगों तक पहुँचाया है। माफिया/डॉन लोगों ने अपने धंदे के लिए आवश्यक कोडवर्ड का निर्माण करने के लिए अधिकतर इसी भाषा का सहारा लिया है। जैसे—

1. एक खोका—एक करोड़ रुपये।

2. एक पेटी—एक लाख रुपये।

3. खर्चापानी—किसी व्यक्ति को पीटने धमकी देना। 4. घोडा—पिस्तौल, छोटी बंदूक।

### बंबईया हिंदी और अन्य भाषाएँ:

बंबईया हिंदी पर अंग्रेजी के साथ साथ भारतीय अन्य भाषाओं का प्रभाव पाया जाता है। मुंबई में लोग हिंदी को अपने अपने तरीके से, अपनी मातृभाषा के प्रभाव से मुक्त हुए बिना, अपनी शैली में बोलते हैं। घाटी मराठी रामा अपना आक्रोश मालिक के प्रति व्यक्त करता हुआ कहता है—“दिन भर सेठ लोग का घर में भांडी घसता है...आक्खा दिवस कुतरा का माफिक पूँछ कूँ ‘....’ से लगाता है...साला अपन घाटी मराठी रामा लोग का भी कोई जिंदगी है?” उक्त रामा की भाषा भले ही हिंदी हो, लेकिन उसकी बोलने की शैली मराठी है। इसमें भांडी, घसता, आक्खा, दिवस, कुतरा जैसे मराठी शब्दों को लेखक ने हिंदी में लगभग घुसेड दिया है। मराठी भाषियों द्वारा जो बंबईया हिंदी बोली जाती है, वह मराठी लहजे की है। मराठी के बाई, पोरी, नवरा-नवरी जैसे शब्दों का प्रयोग साहित्य और सिनेमाओं में खुलेआम हो रहा है। बंबईया हिंदी में कर्म के साथ ‘च’ का प्रयोग मराठी के प्रभाव स्वरूप दिखाई देता है, “ये शाहीर लोग को भी अभी हम क्याच बोले! टेढाच बोलिंगा, टेढाच लिखिंगा, टेढाच करिंगा।”

तमिल बोलने वाला ‘हम’ सर्वनाम की जगह ‘अम’ और ‘को’ कर्मकारक की जगह ‘कूँ’ का प्रयोग करता है। “तुम साला सुअर का अउलाद...अमकूँ बदबू बोलता! टम खून करेगा तुमरा।” कभी कभी शहरी संस्कृति के प्रभावस्वरूप और अपने आप को आधुनिक जीवनशैली में ढालने के लिए हिंदी बोलते समय अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हैं, “देवा रे! हनुमान जी का भक्त इग्लिश स्टार्डिल लाईन मारता है।”

### व्यवहार सुलभ भाषा:

मुंबई का बहुभाषा संपन्न समाज हिंदी को अपनी मातृभाषा की शैली में ढालकर, उसे ढोक-पीठकर, अभिप्रेत अर्थ निकालते हैं। जैसे “इस मुंबई को इस राज को क्या बोले जहाँ हमारी जिंदगी का पाटियाच आउट हो गया।” यहाँ पाटियाच शब्द कबीर के आंखडियों, जिभडिया शब्दों के समान लगता है। अतः कबीर के आंखडियों जिभडिया शब्दों के समान लगता है। इसलिए कबीर के बाद हिंदी में ‘वाणी के डिकटेटर’ अगर कोई हैं तो वे मुंबई के बंबईया हिंदी बोलने वाले लोग हैं। वे अपनी हर दिन की आवश्यकताओं के लिए आवश्यक विचार-विनिमय हेतु बंबईया हिंदी का प्रयोग करते हैं और अपने लिए सहज साध्य उच्चारणों के शब्दों का ही प्रयोग करते हैं या भाषा के प्रवाह के साथ कठिन उच्चारणवाले शब्दों को सहज उच्चारणिय बनाते हैं। इस भाषा में दो शब्दों को एक ही शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। जैसे—आयेला, गयेला, डरेला, पियेला, छपेला, मरेला,... आदि। ऐसे शब्दों के अंत में ‘ला’ ध्वनि जुड़ने के कारण यह शब्द बंबईया हिंदी को सहज-सुलभ और आसान बानते हैं।

### व्याकरण:

बंबईया हिंदी को व्याकरणिक सीमाओं में बांधना उतना संभाव नहीं है। अर्थात् इसमें व्याकरणिक नियमों की कमी हमेशा दिखाई देती है। “कायकूँ हटेगी मैं। तेरे को मोहब्बत करती मैं... नई छोडेगी तेरे कूँ।...तेरे साथ ...सच्ची...तेरी कसम।” प्रस्तुत वाक्यरचना में कर्ता, कर्म, क्रिया के क्रम में एकसूत्रता नहीं है। फिर भी भाव संप्रेषण में किसी प्रकार की बाधा नहीं आई है।

व्यवसाय के अनुरूप बंबईया हिंदी में संक्षिप्तिकरण की प्रवृत्ति आ गई है। संक्षिप्तिकरण में व्याकरण के नियमों को तोड़कर कामचलाउ भाषा बनाई जाती है, जैसे—होटल में काम करनेवाला वेटर सांकेतिक भाषा में बोलता है, “एक साधा मारो!”, अर्थात् एक साधी चाय दे दो। इसमें चाय शब्द स्त्रीलिंग की अपेक्षा पुल्लिंगी हुआ है। अतः लिंग, वचन में परिवर्तन बोलने वाले की मातृभाषा के अनुरूप बदलता है।

बंबईयाहिंदी में अधिकातर अपुन, तेरेको, मेरेको जैसे सर्वनाम का प्रयोग होता है और क्रियाओं को ‘रेली’ व ‘रेला’ प्रत्यय लगता है, जैसे — आरेली, जारेली, खारेली, आरेला, जारेला आदि।

### शब्द, मुहावरे आदि:

बंबईया हिंदी में कुछ नवनिर्मित शब्द विशेष उल्लेखनीय हैं, “बिनधास्त, मचमच, लोचा, लफडा, टोपी, शाणा, साला, साली, घंटा,

टपोरी, मामू, चिकना, चिकनी, रापचिक, हरीपत्ती, भिडु आदि। इस नवनिर्मित भाषा के उपर्यक्त शब्दों का निर्माण मूलतः बंबईया हिंदी से हुआ है। जिनका सार्थक प्रयोग हो रहा है। ‘बिनधास्त’ शब्द का समावेश 2005 में Oxford English Dictionary में हुआ है।

#### अनौपचारिक भाषा:

सडक, फुटपाथ पर कुछ लोग गुट बनाकर जोर-शोर के साथ बोलते हुए पाए जाते हैं। मुंबई में सडक पर घुमने वाले संभवतः ‘टपोरी’ के नाम से जाने जाते हैं। उनकी हिंदह बोलने की शैली, उनका आचरण, उनका पोशाख ;क्तमे ब्वकमद्ध से वे टपोरी लगते हैं। उनके द्वारा बोली जानेवाली गालीगलोच, अनापशनाप बकवास के कारण बंबईया हिंदी को टपोरी हिंदी भी कहा जाता है। यह टपोरी भाषा मनोरंजन और हास्य की भाषा है। इसलिए यह कभी कभी अनौपचारिकता की भाषा लगती है।

#### प्रतीकात्मक भाषा:

बंबईया हिंदी प्रतीकात्मक भाषा है। इसको शैलेश मटियानी का उपन्यास ‘कबुतरखाना’ बहुत अच्छी तरह से सिद्ध करता है। “साला दिमाग में भी वरली के गटर का पानी भरा है।” इसमें वरली के गटर का पानी बुरे विचारों का प्रतीक है।

अंत में कहा जा सकता है कि बंबईया हिंदी का मूल रूप हिंदी भाषा है। हिंदी भाषा में परिवेशानुकूल, आपसी विचार विनिमय के लिए बंबईया हिंदी का जन्म हुआ है। विभिन्न सामाजिक संस्कृतियों को एकसाथ अभिव्यक्त करने वाली और विविध धर्मों में एकता स्थापित करने वाली भाषा मुंबई के लोगों की बोलचाल की बंबईया हिंदी है। यह साधारणतः घर के बाहर बोली जाती है क्योंकि घर में और अपने स्वप्रांतीय रिश्तेदारों के साथ वहाँ के लोग अपनी मातृभाषा में विचार विनिमय करते हुए पाए जाते हैं। अतः विशेषतः गुजराती, मराठी, पंजाबी, और अन्य बोली भाषाओं के प्रभाव से मुंबई में हिंदी की स्वतंत्र बोलचाल की पद्धति ही विकसित हुई और ‘बंबईया हिंदी’ इसका ठोस उदाहरण है।

#### संदर्भ ग्रंथ:

1. कबुतरखाना —शैलेश मटियानी,  
आत्माराम अँड संन्स प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण—1960
2. मुरदाघर—जगदंबाप्रसाद दीक्षित,  
राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज दिल्ली, संस्करण—1974
3. दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता —सुरेद्र वर्मा,  
<http://pustak.org>.
4. यह भी नहीं—महीपसिंह,  
विकिपीडिया
5. बंबईया हिंदी विकिपीडिया संकेतस्थल
6. <http://www.hindilanguage.org>.

# Publish Research Article

## International Level Multidisciplinary Research Journal

### For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed, India

- ★ International Scientific Journal Consortium
- ★ OPEN J-GATE

## Associated and Indexed, USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts  
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra  
Contact-9595359435  
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com  
Website : [www.aygrt.isrj.org](http://www.aygrt.isrj.org)